- एकत्रित की गई पूरी मिट्टी को हाथ से अच्छी तरह मिला लें तथा साफ कपड़े पर डालकर गोल ढेर बना लें।
- अंगुली से ढ़ेर को चार बराबर भागों में बांट दें। जिसमें से दो आमने सामने के भाग हटा दें एवं शेष दो भागों की मिट्टी पुनः अच्छी तरह से मिला लें व गोल ढेर बनायें। यह प्रक्रिया तब तक दोहरायें जब तक लगभग आधा कि.ग्रा. मिट्टी शेष रह जाये। यह प्रतिनिधि नमूना होगा।

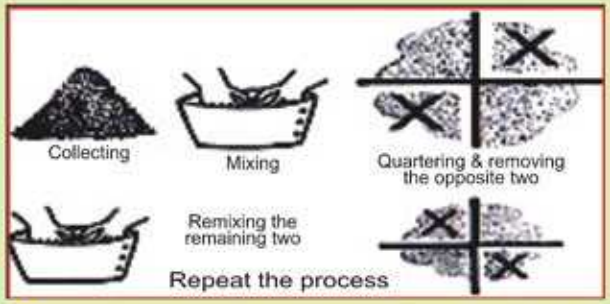

- सूखे मिट्टी नमूने को साफ प्लास्टिक थैली में रखें तथा इसे एक कपड़े की थैली में डाल दें।
- नमूने के साथ एक सूचना पत्रक जिस पर समस्त जानकारी लिखी हो, एक प्लास्टिक की थैली में अन्दर तथा एक कपड़े की थैली के बाहर बांध देवें।

सूचना पत्रक पर निम्न जानकारी लिखी होना चाहिए-

वनमण्डल का नाम –

परिक्षेत्र का नाम –

बीट का नाम –

कक्ष क्रमांक –

रोपण सिंचित / असिंचित –

पर्यावरण का रखें ध्यान, तभी बनेगा देश महान।

नमूना एकत्र करने वाले का नाम एवं हस्ताक्षर

.....

एकत्रित करने का दिनांक .....

इसके पश्चात् नमूनों को प्रयोगशाला में परीक्षण हेतु भेजें।

नमूना एकत्रीकरण एवं संग्रहण में सावधानियाँ-

- जहाँ खाद का ढ़ेर रहा हो वहाँ से नमूना न लें।
- नमूना चिन्हित इकाई से ही लें।
- साफ औजारों (जंग रहित) तथा साफ थैलियों का उपयोग करें।
- नमूनों के साथ सूचना पत्रक अवश्य रखें।
- सूचना पत्रक में जानकारी स्पष्ट लिखी होना चाहिये।
- वृक्षों के नीचे से मृदा नमूना एकत्र नहीं करना चाहिये।
- मेड़ों के समीप से मृदा नमूना एकत्र नहीं करना चाहिये।
- मृदा नमूनों को जहाँ फर्टीलाइजर, केमिकल्स या डिटर्जेंट इत्यादि रखा हो, ऐसे स्थानों पर संग्रहित कर नहीं रखना चाहिये।
- लंबे समय तक संग्रहण के लिये काँच या ग्लास, पोर्सलीन (Porcelain) के बरतन या पोलीथीन का उपयोग करना चाहिये।

सम्पर्क

डॉ. प्रतीक्षा चतुर्वेदी, श्री विनय कोरी

मृदा विज्ञान प्रयोगशाला

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

Phone : 0761-2666529, 2665540

वृक्ष धरा के भूषण, दूर करे प्रदूषण।

मृदा नमूना एकत्रीकरण विधि

मृदा विज्ञान प्रयोगशाला

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.)

मृदा स्वस्थ है जहाँ, स्वस्थ वन है वहाँ।

मृदा–

पृथ्वी की ऊपरी सतह पर मोटे, मध्यम और बारीक कार्बनिक तथा अकार्बनिक मिश्रित कणों को मृदा (Soil) कहते हैं।

मृदा परीक्षण क्या है–

"क्षेत्र की मिट्टी में पौधों की समुचित वृद्धि एवं विकास के लिये आवश्यक पोषक तत्वों की उपलब्ध मात्राओं का रासायनिक परीक्षणों द्वारा आंकलन करना एवं इसके साथ ही मृदा की लवणीयता, क्षारीयता एवं अम्लीयता की जाँच करना मृदा परीक्षण कहलाता है।"

मृदा परीक्षण के उदेश्य–

- मृदा में पोषक तत्वों के स्तर की जांच करना।
- किसी भी प्रजाति के रोपण के लिये भूमि की उपयुक्ता का पता लगाना।

मृदा का नमूना एकत्र करना–

मृदा परीक्षण के लिये सबसे महत्वपूर्ण होता है कि मिट्टी का सही नमूना एकत्र करना। इसके लिये जरूरी होता है कि नमूना इस प्रकार लिया जाये कि वह जिस क्षेत्र से लिया गया है। उसका पूर्ण प्रतिनिधित्व करता हो।

प्रतिनिधि नमूना लेने के लिये निम्न बातों पर ध्यान दें–

- जिस क्षेत्र से नमूना लिया जा रहा हो उस क्षेत्र में पौधों की वृद्धि एक जैसी रही हो।
- उस क्षेत्र में एक समान उर्वरक उपयोग किये गये हों।
- जमीन समतल व एक ही हो तो ऐसी स्थिति में पूरे क्षेत्र से एक ही संयुक्त (composite) या प्रतिनिधि नमूना ले सकते हैं।

इसके विपरीत यदि क्षेत्र में अलग–अलग फसल ली गयी हो एवं भिन्न–भिन्न भागों में अलग–अलग उर्वरक का उपयोग किया गया हो, रोपित प्रजाति की वृद्धि कहीं कम, कहीं ज्यादा रही हो, जमीन समतल न होकर ढालू हो तो इन परिस्थितियों में क्षेत्र को समान गुणों वाली संभव इकाइयों में बांटकर हर इकाई से अलग–अलग प्रतिनिधि नमूना लेना चाहिये।

- सामान्यतः एक नमूना इकाई (one sampling unit) का क्षेत्र 5–10 हेक्टे. से ज्यादा नहीं होना चाहिए।
- मृदा नमूना सामान्यतः रोपण के लगभग 1–2 माह पहले लेकर परीक्षण हेतु भेजना चाहिए, ताकि समय पर परिणाम प्राप्त हो जाये एवं सिफारिश के अनुसार खाद एवं उर्वरकों का उपयोग किया जा सके।

मृदा नमूना, एकत्रीकरण हेतु आवश्यक उपकरण एवं सामग्री–

- ऑगर (स्क्रूबोरर ऑगर, ट्यूब ऑगर, पोस्ट होल ऑगर, क्रोबार प्रोब्स), खुरपी, फावड़ा, बाल्टी या ट्रे, कपड़े एवं प्लास्टिक की थैलियाँ, पेन, धागा, सूचना पत्रक, कार्ड आदि।
- यदि ऑगर उपलब्ध न हो तो फावड़ा (Spade) या खुरपी का उपयोग भी कर सकते हैं।

प्रतिनिधि नमूना एकत्रीकरण विधि–

- जिस क्षेत्र से नमूना लेना हो उसमें जिग–जैग प्रकार से घूमकर 10 –15 स्थानों पर निशान बना लें, ताकि क्षेत्र के सभी हिस्से शामिल हो सकें।
- चुने गये स्थानों पर ऊपरी सतह से घास–फूस, कूड़ा करकट आदि हटा दें।
- इन सभी स्थानों पर V आकार का गड्ढा खोदें। सामान्यतः खेत में, सीजनल फसल एवं नर्सरी में 0–15 से.मी. गहराई का गड्ढा खोदें एवं वानिकी प्रजातियों के लिये 0–30 से.मी. एवं 30–60 से.मी. गहराई का गड्ढा खोदा जाता है।
- गड्ढे को साफ करके खुरपी से एक तरफ ऊपर से नीचे तक 2 से.मी. मोटी मिट्टी की तह को निकाल लें तथा साफ बाल्टी या ट्रे में रखें।